

# Living the Lotus

7  
2021

VOL. 190

*Buddhism in Everyday Life*

*Founder's Reflections*

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निच्चिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

Living the Lotus  
Vol. 190 (July 2021)

Senior Editor: Keiichi Akagawa  
Editor: Kensuke Osada  
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly  
by Rishsho Kosei-kai International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: living.the.lotus.rk-international  
@kosei-kai.or.jp

## सहज विश्वास का अर्थ कभी भी बच्चे को हारने नहीं देना

बढ़ने और परिपक्व होने के लिए, बच्चों को उन लोगों के करीब होना चाहिए जो बिना शर्त उन पर सहज विश्वास करते हैं। तर्क के लिए, मान लें कि माता-पिता ही एकमात्र ऐसे लोग हैं जो अपने बच्चे पर सहज विश्वास करना जारी रखेंगे, चाहे उसका व्यवहार कितना भी अपराधी प्रवृत्ति का क्यों न हो जाय। एक वयस्क का ऐसा पूर्ण विश्वास बच्चे का अंतिम आश्रय होता है, और यह उनके लिए अच्छी प्रवृत्ति का होने की प्रेरणा बन जाता है।

यदि आप केवल एक बच्चे पर सहज विश्वास करने में सक्षम हैं, क्योंकि वह एक अच्छा बच्चा है। आप उस पर वास्तव में सहज विश्वास अब और नहीं करेंगे, यदि उसने कुछ बुरा किया है। दूसरे व्यक्ति पर सहज विश्वास का अर्थ है, अपने बुद्ध स्वभाव में पूर्ण विश्वास रखते हुए विश्वासघात की संभावना को स्वीकार करना।

स्मरण करो कि बोधिसत्व सदापरिभूत — यहाँ तक कि वे भी जिन्होंने उन पर पत्थर फेंके या प्रहार करने का प्रयास किया। जिन लोगों ने उस पर प्रहार करने की कोशिश की, उन्होंने चाहे कितना भी बुरा व्यवहार किया हो, सदापरिभूत ने इसे अस्थायी रूप में देखा। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि बुद्ध के पुत्र के रूप में उनका वास्तविक स्वभाव अंततः प्रकाश में आएगा, और वे आगे चलकर बुद्ध बनेंगे।

माता-पिता के रूप में आपके बच्चे का व्यवहार आपको कितना भी परेशान करने वाला क्यों न लगे, यदि आप बस अपना दृष्टिकोण बदलते हैं, तो आप निश्चित रूप से उसमें अच्छाई पाएँगे। सहज विश्वास का अर्थ है, कभी किसी बच्चे का त्याग नहीं करना चाहिए। अपने बच्चे के बुद्ध स्वभाव के प्रति श्रद्धा रखने का अर्थ है, उसके हृदय की गहराई में निहित निष्कलंक मन की खोज में उसकी मदद करने का प्रयास करना, चाहे वह कितना भी नकारात्मक लक्षणों से आच्छादित हो।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 10 (कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 142-143

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।



## President's Message

### करुणा की आँखों से

निचिको निवानो  
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

#### करुणा की आँखों से जीवित प्राणियों को देखने का अर्थ

वे करुणा की आँखों से जीवित प्राणियों को देखते हैं उनका आशीर्वाद विशाल और अथाह महासागर की तरह है। पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-25 की एक गाथा की प्रसिद्ध पंक्तियों से हमें बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के सार्वभौमिक द्वार का परिचय मिलता है।

यह परिवर्त बताता है कि प्राणियों को करुणा की दृष्टि से देखने से अनन्त आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। यदि हम संसार और जीवित प्राणियों को करुणा की दृष्टि से देखने के दृष्टिकोण को बनाए रखें, तो निश्चित हो जाता है कि हम किस प्रकार की चीजों को महत्व देते हैं?

इस पत्रिका के जून अंक में मैंने कवि सांसेई यामाओ (1938–2001) का उल्लेख किया है। अपनी कविता “काज़ेओन बोसात्सु,” (बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर) में, उन्होंने स्पष्ट, सरल शब्दों में बुद्ध की देशना की सच्चाई की व्याख्या की है, जिसे इस प्रश्न का उत्तर कहा जा सकता है। मुझे इस कविता का एक अंश उद्धृत करना चाहिए, जिसे कानोन ग्यो नो मोरी ओ आरुकु ( “समन्तमुखपरिवर्त” के जंगल में घूमना) पुस्तक से उद्धृत किया गया है:

अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व का  
गहरी करुणा का मन संसार में प्रवाहित हो रहा है  
उनकी गहरी करुणा भी मुझ में बहती है  
यदि कोई मुझे खुशी देता है,  
वह व्यक्ति अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व है  
अगर कोई पेड़ पौधा मुझे सुकून देता है,  
वह पेड़ पौधा निश्चय ही अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व है।  
जो किसी को दोष नहीं देता,  
मैं अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व हूँ,  
जब तुम कोई हो जो मुझे क्षमा कर दे,  
आप अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व हैं।  
अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व  
गहरी करुणा का मन संसार में प्रवाहित है

## President's Message

आपके माध्यम से बहता, मेरे माध्यम से बहता  
वह गहरी करुणा का यह एक मन है।  
गहरी करुणा का मन संसार में प्रवाहित है  
आपके माध्यम से बहता, मेरे माध्यम से बहता  
वह गहरी करुणा का यह एक मन है।

मुझे लगता है कि यह अद्भुत कविता इसे पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने बुद्ध स्वभाव के प्रति जागृत कर सकती है। कवि चाहता है कि हम समझें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है, और उसके करुणामय मन ने एक ऐसी कविता बनाई है जो सरल, सीधी भाषा में, शिक्षाओं की सच्चाई को व्यक्त करती है।

यदि आप इस कविता के प्रकाश में “करुणा की आँखों से जीवित प्राणियों को देखना” वाक्यांश के अर्थ के बारे में सोचते हैं, तो आप देखेंगे कि हम सभी में उतनी ही गहरी करुणा है जितनी कि संसार की अवलोकितेश्वर बोधिसत्व के संबंध में, जो हमारे भीतर बहती है। भले ही प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन जीने का तरीका हो, हम एक संपूर्ण व्यक्ति बनाते हैं- हम सभी एक महान जीवन-शक्ति जी रहे हैं, जो स्वयं और दूसरों की एकता है, और हम इस बहुमूल्य, पवित्र जीवन को एक साथ प्राप्त कर रहे हैं। करुणामय निगाहों से देखने का यह तरीका असंख्य आशीर्वादों को बुलाता है।

### पथ पर प्रकाश चमक रहा है

उपन्यासकार वाहेइ तातेमात्सु (1947-2010) ने एक अनुभव के बारे में एक निबंध लिखा है, जिसमें उन्होंने तोचिगी प्रान्त में एक प्रसिद्ध पवित्र पर्वत माउंट नांताई पर चढ़ाई की थी।

तातेमात्सु और उनके समूह के साथ फ्लैशलाइट नहीं था, क्योंकि उन्होंने अंधेरे में पहाड़ पर होने की उम्मीद नहीं की थी। हालाँकि, उनके उतरने में देरी हुई और सूर्य ढलने लगा, पहाड़ के रास्ते पर चलना कठिन होने लगा था। पैरों के नीचे दूर झील चुज़ेनजी, स्मृति चिन्ह की दुकानों और झील के किनारे चमकते सराय की रोशनी देख सकता था, लेकिन वे सब तुलना में केवल पहाड़ी के अंधेरे को और काला बना रहा थे। तभी उसने अपने सामने एक धुंधली रोशनी देखी। यह एक महिला की छोटा टॉर्च से आ रही थी, जो थक गई थी और रास्ते के किनारे झुकी हुयी थी। तातेमात्सु और उनके साथी महिला के पास पहुँचे और उसका पैकेट उठाया। तब वे उस स्त्री के संग पहाड़ से नीचे उतरे, उस मार्ग पर उनके पैरों के पास उसकी छोटी, पतली ज्योति पड़ रही थी।

तातेमात्सु ने लिखा है कि “वह महिला जिसके साथ हम चल रहे थे, वह उसकी ध्वनियों का संरक्षक बन गयी, जबकि वह जिसने हमारे लिए मार्ग जलाया, वह हमारी ध्वनियों का संरक्षक बन गयी। दूर-दूर तक रोशनी कितनी भी तेज क्यों न हो, उन्होंने हमारी कोई मदद नहीं की। इसके विपरीत, आपके सामने प्रकाश कितना भी मद्धिम रोशनी क्यों न हो, वह एक बहुत बड़ी मदद थी।” वास्तव में, यह दूसरों के लिए करुणा और विचार की धुंधली रोशनी में बोधिसत्व प्रकट होता है। जैसा कि पुण्डरीकसूत्र सूत्र का परिवर्त- 25 सिखाता है, अवलोकितेश्वर बोधिसत्व हमें मुक्ति का साधन दिखाने के लिए कभी भी, कहीं भी प्रकट हो सकता है।

पुण्डरीक सूत्र का परिवर्त -16, “तथागत का शाश्वत जीवन,” गाथा की पंक्तियों के साथ समाप्त होता है, जिसे करुणा का सबसे बड़ा व्रत कहा जाता है:

किस प्रकार मैं इन जिवों को

परम बोधि में प्रवेश कराऊँ

जिससे उनकी सत्वर बुद्धत्व की प्राप्ति हो।

समन्तमुख परिवर्त के अवलोकितेश्वर यह कहकर प्रोत्साहित करते और मुक्ति दिलाते हैं कि यदि हम में से प्रत्येक इस व्रत का पालन करता है और अन्य प्राणियों का सोचविचार करता है, तो हम कई बोधिसत्व पैदा करेंगे और सभी को खुश करेंगे।

# समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

निक्कयो निवानो

## बोधिसत्व समन्तभद्र के चिंतन के लिए विधि का सूत्र है

जैसा कि इसके शीर्षक से संकेत मिलता है, यह सूत्र पुण्डरीकसूत्र के अन्तिम परिवर्त के बाद आता है, बोधिसत्व समन्तभद्र को केंद्रीय भूमिका में प्रस्तुत करता है। लेकिन स्वीकृति और पश्चाताप के व्यावहारिक तरीकों पर विशेष जोर देने के कारण, इसे कभी-कभी स्वीकृति और पश्चाताप का सूत्र कहा जाता है।

### बोधिसत्व समन्तभद्र का चिंतन

बोधिसत्व समन्तभद्र का चिंतन करना उनके गुणों को समझने का व्यावहारिक तरीका है, जो हमारे मन को उनके मन के साथ जोड़ा जाता है और हमारा मन बुद्ध मार्ग पर स्थिर हो जाता है, ताकि हमारा आध्यात्मिक अनुशासन अंततः उनके जैसा हो जाए।

सूत्र बार-बार बताता है कि बोधिसत्व समन्तभद्र के भौतिक रूप को कैसे देखना चाहिए, जो बोधिसत्व के भाव का मन से सामंजस्य हो जाय। इस स्थिति तक पहुँचने में असमर्थता एक व्यक्ति को स्वीकृति और पश्चाताप करने और अभ्यास की अपूर्णता पर प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता का संकेत देती है।

यहाँ तक कि अभ्यासी जो बोधिसत्व समन्तभद्र के शरीर को देख सकते हैं, उन्हें अपने अभ्यास और प्रयास को रोकना नहीं चाहिए, हालाँकि, यह केवल बुद्ध के शरीर को देखने की उनकी क्षमता के माध्यम से

### सभी चीजों की अंतिम वास्तविकता

है - अपने मन को बुद्ध के साथ संरेखित करना - ताकि उनका अभ्यास परिपूर्ण हो सके।

यह सूत्र बताता है कि स्वीकृति और पश्चाताप की परिणति का अर्थ है शून्यता की सबसे प्रमुख देशना पर विचार करना, जो सभी चीजों की अंतिम वास्तविकता है। इस देशना की पूर्ण समझ और स्वीकृति के साथ एकाग्र चिंतन, छह इंद्रियों में से प्रत्येक के लिए स्वीकृति और पश्चाताप के प्रदर्शन पर आधारित, अभ्यासी को बुद्ध के मन के साथ एकता की स्थिति में लाता है। इस स्तर पर, सभी गलतियाँ, जैसे ठंड और ओस, ज्ञान के सूर्य से दूर हो जाती हैं।





## स्वीकृति और पश्चाताप का व्यावहारिक अनुप्रयोग

इस तरह के दार्शनिक शब्दों में सोचना सामान्य अभ्यासियों के लिए कठिन है, हालाँकि, इस सूत्र के अंत में, बुद्ध स्वीकृति और पश्चाताप के प्रदर्शन का एक अधिक व्यावहारिक तरीका साझा करते हैं।

पहली विधि के लिए, बुद्ध बताते हैं कि सामान्य लोगों को सदा तीन रत्नों के शरण में जाना चाहिए-- बुद्ध, धर्म और संघ। उन्हें कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो संघ के नियमों का पालन करने वालों के अभ्यास में बाधा डालता हो। इसके अलावा, उन्हें ध्यान केंद्रित करने के छह तरीकों का अभ्यास करके अपने मन को एकाग्र करना चाहिए: बुद्ध, धर्म, संघ, शीलें, दान और स्वर्ग पर ध्यान केंद्रित करना कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्हें शून्यता की सबसे प्रमुख देशना - सभी चीजों की अंतिम वास्तविकता के प्रति भी सदा सचेत रहना चाहिए।

स्वीकृति और पश्चाताप का दूसरा तरीका है, अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होना और अपने शिक्षकों और बड़ों का सम्मान करना है।

स्वीकृति और पश्चाताप का तीसरा तरीका है कि वे जो शासक हैं सच्चे धर्म के साथ शासन करें और अपने लोगों को गलत विचारों से गुमराह नहीं करें। और यदि वे भूमि पर शासन नहीं करते हैं, तो उन्हें अपने संगठनों या कंपनियों के भीतर लोगों को सही तरीके से मार्गदर्शन करना चाहिए।

स्वीकृति और पश्चाताप का चौथा तरीका यह है कि उनको अपनी सीमा में एक आदेश निकालना चाहिए कि वे छह दिनों तक हत्या से विरत रहने का यथासंभव प्रयास करें- हत्या से विरत रहें और इस आदेश का पालन करें। (प्राचीन भारत में, प्रत्येक महीने में छह दिन का त्याग होता था, जो धार्मिक अभ्यास के विशेष दिन थे। इन दिनों, लोगों को हत्या करने की मनाही थी।)

स्वीकृति और पश्चाताप का पाँचवाँ तरीका है कारण और फल में गहराई से विश्वास करना है। परम सत्य के मार्ग में विश्वास करना और यह जानना है कि बुद्ध का कभी निधन नहीं होता है।

## बौद्ध धर्मदेशनाओं के सारांश के रूप में पाँचवीं विधि

स्वीकृति और पश्चाताप की उपर्युक्त पाँच विधियाँ महत्वपूर्ण प्रथाएँ हैं- विशेष रूप से पाँचवीं विधि: "कारण और फल में गहराई से विश्वास करना, एक परम वास्तविकता के मार्ग में विश्वास करना, और यह जानना कि बुद्ध का कभी निधन नहीं होता है।" यह बौद्ध धर्मदेशनाओं का एक उपयुक्त सारांश है।

कारण और फल को प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त, या कार्यकारण का सिद्धान्त भी कहा जाता है। यह सत्य बुनियादी बौद्ध धर्मदेशनाओं का मूल है।

परम वास्तविकता के मार्ग का अर्थ है कि बुद्ध बनने का मार्ग, या बोधिसत्त्व मार्ग। इसका अर्थ यह है कि यद्यपि बुद्ध की धर्मदेशनाओं में कई सतही अंतर प्रतीत हो सकते हैं, एक परम सत्य - एक सत्य - सभी को बुद्धत्व के मार्ग पर बाँधता है।

और अंत में, यह जानने के लिए कि बुद्ध का कभी निधन नहीं होता है, इस सत्य को जानना है कि शाश्वत आदि बुद्ध में अनन्त जीवन है, और हमें जीवन का उपहार दिया गया है और शाश्वत आदि बुद्ध द्वारा बना हुआ है।

यदि यह त्रिविध विश्वास हमारे मन और हृदय में है, तो हम में से प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसी चित्तावस्था को प्राप्त कर सकता है, जो पूर्णतः मुक्त है- और यही सच्ची मुक्ति है। त्रिविध पुण्डरीक सूत्र के इन सुनहरे शब्दों से अधिक उपयुक्त निष्कर्ष शायद ही हो।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.225-29.



## Director's Column

### प्रत्येक मुठभेड़ को संजोना पुण्डरीक सूत्र को जीना है

रेवरेंट केइइची आकागावा  
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने इस महीने के लिए अपने संदेश में समन्तमुख परिवर्त की चर्चा की है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे वे "करुणा की आँखों से जीवित प्राणियों को देखने" पर विशेष महत्व देते हैं। जैसे ही मैंने उनका संदेश पढ़ा, मुझे लगा जैसे प्रेसिडेण्ट सीधे मेरे अन्तरमन से कह रहे हैं, "हमें जागरूक होना चाहिए कि हम सभी के पास करुणा की आँखें हैं, जो असंख्य आशीर्वाद देती हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, आइए हम दूसरों के लिए करुणा और विचार के मन के साथ अपना जीवन व्यतीत करें।"

यह मुझे संस्थापक निक्क्यो निवानो की याद दिलाता है, जिन्होंने कृपया हमें सिखाया है कि प्रत्येक मुठभेड़ को पुण्डरीक सूत्र को जीना समझना चाहिए। मुझे यह भी लगता है कि, अपने शब्दों और कार्यों के माध्यम से प्रेसिडेण्ट निवानो और मनोनीत प्रेसिडेण्ट कोशो निवानो हमें अपनी हर मुठभेड़ और दूसरों के साथ बातचीत की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

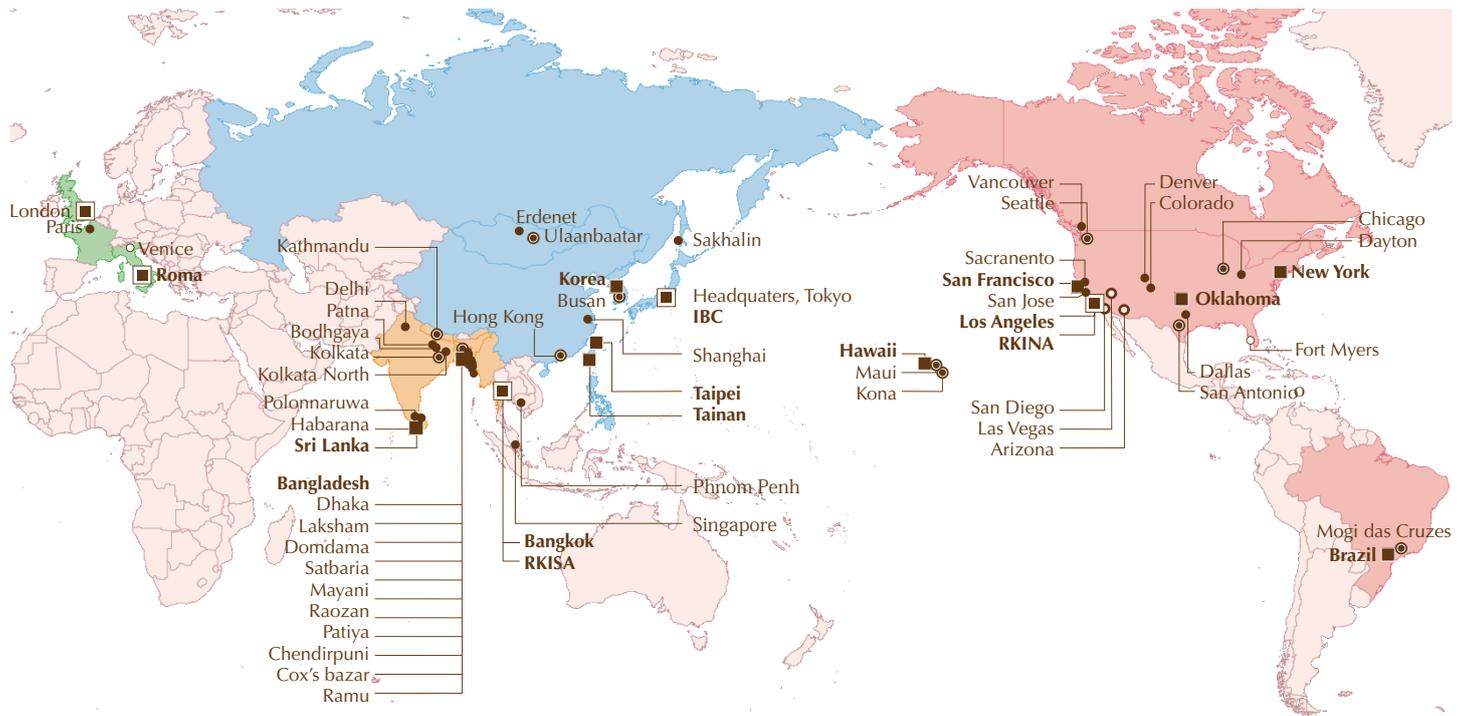
वर्ष में कई बार प्रेसिडेण्ट निवानो जापान में मंत्रियों के साथ ऑनलाइन गोलमेज चर्चा करते हैं। जिन मंत्रियों के धर्म केंद्र वर्षगांठ मनाते हैं, मुझे हाल ही में पता चला है कि प्रेसिडेण्ट पूछते हैं कि क्या वे इनको मनाने में सक्षम होने के लिए आभारी हैं। भले ही, कोविड-19 महामारी के कारण कोई भी उस तरह का समारोह मनाने में सक्षम नहीं है, जिस तरह से वे आशा करते हैं। मुझे लगता है कि प्रेसिडेण्ट का प्रश्न मंत्रियों को पूरे मन से अपने सदस्यों के दुःखों और पश्चाताप के महत्व की याद दिलाता है, जिन्हें वर्षगांठ समारोह की प्रतीक्षा रहती है। मैं प्रेसिडेण्ट के प्रश्न को सभी के प्रति करुणा की दृष्टि को गर्मजोशी भरे विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में भी स्वीकार करता हूँ।

प्रेसिडेण्ट के प्रश्न के बारे में जानने के अवसर के लिए सराहना के साथ, मैं एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए अपने अभ्यास को जारी रखूँगा, जो दूसरों को करुणा की दृष्टि से देख सकता है और अपने दैनिक जीवन में उनके करीब आ सकता है - किसी भी समय, स्थान, और किसी भी व्यक्ति के साथ।



We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)

# Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



## Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA  
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633  
 Email: sangha@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

## Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1809 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA  
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

## Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA  
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA  
 POBox 33636, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567  
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

## Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA  
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA  
 TEL: 1-650-359-6951 Email: [info@rksf.org](mailto:info@rksf.org)

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

## Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA  
 TEL: 1-212-867-5677 Email: [rky39@gmail.com](mailto:rky39@gmail.com) URL: <http://rk-ny.org>

## Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA  
 TEL: 1-773-842-5654  
 Email: [murakami4838@aol.com](mailto:murakami4838@aol.com) URL: <http://rkchi.org>

## Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA  
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA  
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303  
 Email: [rkokdc@gmail.com](mailto:rkokdc@gmail.com) URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA  
 TEL: 1-303-446-0792

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA  
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

## The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-269-4567  
 Email: [dharmasa@rksabuddhistcenter.org](mailto:dharmasa@rksabuddhistcenter.org)  
 URL: <http://rksabuddhistcenter.org>

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA  
 (Mail) POBox 692148, San Antonio, TX 78249, USA  
 TEL: 1-210-558-4430 FAX: 1-210-696-7745  
 Email: [dharmasanantonio@gmail.com](mailto:dharmasanantonio@gmail.com)  
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

## Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA  
 TEL: 1-253-945-0024 Email: [rkseattlewashington@gmail.com](mailto:rkseattlewashington@gmail.com)  
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

## Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

## Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil  
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377  
 Email: [risho@rkk.org.br](mailto:risho@rkk.org.br) URL: <http://www.rkk.org.br>

**Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes**

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

**在家佛教韓國立正佼成會**

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3  
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea  
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

**在家佛教韓國立正佼成會釜山支部**

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F  
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

**社團法人在家佛教立正佼成會**

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓  
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan  
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

**台南市在家佛教立正佼成會**

台灣台南市東區崇明 23 街 45 號  
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan  
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488  
Email: koseikaitainan@gmail.com

**Rissho Kosei-kai South Asia Division**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

**Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,  
Bihar, India

**Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**

Please contact Rissho Kosei-kai of Kolkata

**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,  
New Delhi 110060, India

**Rissho Kosei-kai of Singapore**

Please contact Rissho Kosei-kai International

**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,  
Phnom Penh, Cambodia

**RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

**Rissho Kosei-kai of Bangkok**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

**Rissho Kosei Dhamma Foundation**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka  
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

**Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

Please contact Rissho Kosei Dhamma Foundation

**Rissho Kosei-kai Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
TEL: 880-2-41360470

**Rissho Kosei-kai Mayani**

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Damdama**

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Satbaria**

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanail, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Chendhirpuni**

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,  
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Raozan**

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Laksham**

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Dhaka**

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Cox's Bazar**

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Please contact Rissho Kosei-kai Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Patiya****Rissho Kosei-kai Ramu****Rissho Kosei-kai Aburkhiln****Buddiyskiy khram "Lotos"**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia  
TEL: 7-4242-77-05-14

**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai****Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia  
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia  
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

**Rissho Kosei-kai of Erdenet**

Please contact Rissho Kosei-kai International

**Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia  
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Please contact Rissho Kosei-kai di Rome

**Rissho Kosei-kai of Paris****Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of the UK**

29 Ashbourne Road, London W5 3ED, UK  
TEL: 44-20-8933-3247 Email: info@rkuk.org URL: <https://www.rkuk.org>  
Facebook: <https://www.facebook.com/rkuk.official>  
Twitter: [https://twitter.com/rkuk\\_official](https://twitter.com/rkuk_official)  
Instagram: [https://www.instagram.com/rkuk\\_official](https://www.instagram.com/rkuk_official)

**Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)**

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F  
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan  
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>